रात्रि क्लास 29/10/68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?
अभी मीठे2 बच्चे तो समझ गये हैं रूहानी बाप आत्माओं को, जैसे खुद है ज्ञान का सागर वैसे ही बच्चों को ज्ञान का सागर बना रहे हैं। आगे थे तुम भक्ति के सागर। अभी बने हो ज्ञान के सागर। भक्ति से उतरती कला ज्ञान से चढ़ती कला। सागर दोनों है। भक्ति वालों को भी अच्छा नशा रहता है। यहाँ तुमको नशा चढ़ता है ज्ञान का। आगे भक्ति का था। अभी ज्ञान का चढ़ता है। भक्ति का भी तुमको फुल नशा था। ज्ञान का भी तुमको फुल नशा है। तुम हरेक नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपन को स्वदर्शनचक्रधारी समझते हो। बरोबर हम ज्ञान के सागर भी थे और भक्ति के सागर भी थे। भक्ति के सागर होने से उतरते आये। ज्ञान से चढ़ते हैं। भक्ति कब शुरू हुई जब रावण राज्य हुआ। कहते भी हैं रावण राज्य है। बापू गांधी था तब भी कहते थे रामराज्य स्थापन करते हैं। अर्थात् रावण राज्य था; परन्तु वह तो जिस्मानी बापू था। रामराज्य तो हुआ नहीं। रूहानी बापू तो एक ही है। गांधी यह नहीं जानते थे बाप को याद करने से पाप जलेंगे। यह बेहद का बापू अपने साथ योग सिखाते हैं; क्योंकि मुझे पतित–पावन कहते हैं तो पावन होने का योग सिखलाये तुमको पावन बनाते हैं। मनुष्य एक्टर होकर न जाने तो नास्तिक कहा जाता है। अभी तुम बाप को भी जानते हो और बाप की रचना के आदि, मध्य, अन्त को भी जानते हो। हरेक को समझना है हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। और फिर आप समान भी बनाना है। गोया प्रजा बनाते हैं। बच्चों को अपनी राजाई और प्रजा बनानी है गृहस्थ व्यवहार का कर्तव्य करते हुए। एक/दो को यह रंग लगाना है पावन बनाना है। बच्चे समझते जावेंगे पावन दुनिया को स्वर्ग, पतित दुनिया को नर्क कहा जाता है। पुराने पत्ते तो देवी देवता धर्म के हैं उनकी बुद्धि में बैठेगा। बाकी जो देवी देवता धर्म के पत्ते न होंगे उनकी बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। पाप कटेंगे उनकी जिनकी कल्प2 कटी है। यह धर्म की स्थापना कैसे वन्डरफुल है। और जो आते हैं धर्म स्थापक जिनको कहा जाता है वह कुछ करते थोड़े ही हैं। ताकत जो मिलती है वह धर्म स्थापना की वहाँ भी यहाँ से ताकत लेकर जाते हैं। फिर आते हैं धर्म स्थापन होता जाता। मेहनत नहीं करते। बाप सभी का विनाश करते हैं फिर लायक भी बनाते हैं। बाप को सभी से ताकत लेनी है फिर जाकर अपने धर्म में सुख पाते हैं। बाप सर्व की सद्गति कर देते हैं। सभी का हिसाब किताब चुक्तू हो जाता है। आकर धर्म स्थापन करते हैं। मेहनत सारी बाप ही करते हैं। सर्व की सद्गति दाता है ना। इसलिए उनको सभी परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं। इनको कितनी मेहनत करनी पड़ती है। सभी धर्म स्थापक आकर मंत्र लेंगे। मन्मनाभव मद्याजीभव। दिन प्रतिदिन तुम्हारे में जौहर भरता जावेगा। जितना याद की यात्रा में रहेंगे तो फिर गुण भी आवेंगे। याद की यात्रा में बहुत फायदा है। विघ्न भी इसमें पड़ते हैं; क्योंकि तुम पावन बनते हो। माया रावण पतित बनाती है। तो विघ्न डालती है। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। इस समय तक जो स्थापना हुई है हूबहू कल्प पहले भी हुई थी। भल मनुष्य बिचारे शास्त्रों को पकड़ बैठे हैं। अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। वह भक्ति में फिर कितना नुकसान पाते हैं। बाप ने समझाया है तुम कितने साहुकार थे। स्वर्ग की महिमा है ना। बच्चे जानते हैं हम विश्व के मालिक थे। अभी यह शरीर छोड़ फिर हम विश्व के राजकुमार बनेंगे। कितनी बड़ी राजधानी स्थापन होती है। राजधानी सिर्फ बाप ही आकर स्थापन करते हैं। तो सभी को पुरुषार्थ करना है। उठते–बैठते, चलते–फिरते बाप को याद करना है। स्प्रीचुअल नालेज अक्षर कहते हैं; परन्तु दुनिया में सिवाय तुम बच्चों के कोई नहीं जानते हैं। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग कितना कड़ा अज्ञान मार्ग है। ज्ञान से तुम्हारी सदगति होती है। अज्ञान को भक्ति कहा जाता है। आगे ऐसे नहीं समझते थे। अभी समझते हो ज्ञान से सद्गति होती है। अज्ञान से नीचे गिरना, ज्ञान से ऊपर चढ़ना है। और फिर पवित्र भी बनना है। हरेक के पुरुषार्थ का भी साक्षात्कार होता है। तुम्हारा नाम बाला हो जावेगा तो सभी तुमको देने लग पड़ेंगे; परन्तु तुम हो सर्राफ। ऐसा थोड़े ही लेंगे जो भर कर देना पड़े। बाबा भर कर देंगे तो फिर हमको कम पड़ जायेगी। यह तो सभी यहाँ मिट्टी में मिल जाना है किसके नाम न आना है। तुम बच्चे जानते हो नई दुनिया में सभी नई चीज़ें ही मिलेगी। नई दुनिया को कहा जाता है स्वर्ग। वन्डर आफ

न्यू वर्ल्ड। बाकी सात वन्डर्स हैं पुरानी दुनिया के। वह सभी न रहेंगे। न चीज़ रहेगी न देखने वाले ही रहेंगे। यह सभी नालेज बुद्धि में होनी चाहिए फादर शोज़ सन। रूहानी बाप सभी आत्माओं को सुनाते हैं। फिर वह दूसरे आत्माओं को सुनाते हैं। बच्चों को ही सर्विस करनी है तो बाबा यहाँ बैठ गये हैं। ज़रा भी ख्याल न होता है। चैक कराने का ख्याल भी नहीं होता है। दिल भी नहीं होता है। यहाँ तो बड़ा ही मजा है। यहाँ बहुत मदद मिलती है। सभी भूलना है। पिछाड़ी में कोई भी याद न आये। बाप देखते भी हैं; परन्तु फिर भी भूलना पड़ता है। बच्चे कहते हैं बाबा हम आपको बहुत याद करते हैं। शिवबाबा कहते हैं याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। करते हो न करते हो सो तो तुम ही जानो। मेरे साथ सच कहे या झूठ कहे। नुकसान वा फायदा तुमको है। इस दादा को तो सभी भूलना है। शरीर छोड़कर जाना है। नाटक पूरा होता है। तुमको यहाँ कोई बाहर का गोरख धंधा नहीं। बाहर जाने से तो सभी याद आते हैं। धंधा आदि याद आवेगा। यहाँ तो बाप सभी को भुलाते हैं। याद पड़ी तो भी करेंगे क्या। यहाँ तो तुम आते ही हो रिफ्रेश होने। यहाँ तुम्हारा चार्ट अच्छा वृद्धि को पाता है। जितना बाप को याद करेंगे तो थकेंगे नहीं। शरीर को भूलना है। अपन को आत्मा समझना है। एक तो बैटरी भरेगी और जमा होता जावेगा। एक/दो को सावधानी देते चलेंगे बाप को याद करो तो पाप कट जाये। यहाँ और कोई धंधा–धोरी आदि नहीं। बच्चे रिफ्रेश होने आते हैं। यहाँ से वहाँ जाने से जैसे गौरख धंधे में फँस जाते हैं। यहाँ तो बच्चों की उन्नति होती है। बैटरी भरती है। यह फायदा होता है। खुशी भी होती है। हम ईश्वरीय परिवार में बैठे हैं। आसुरी परिवार का कोई बात नहीं। तुम हो सभी हंस। बगुला कोई नहीं। इसलिए तुमको कशिश होती है। सम्मुख रहने से बैटरी अच्छी चार्ज होगी। बच्चों को खुशी भी होती है। बाहर में तो मित्र–सम्बन्धी आदि की याद आती रहती है। यहाँ नहीं रहता है। हम सभी भाई भाई हैं। और भाई बहन हैं। क्रिमनल दृष्टि की बात ही नहीं। तुम बच्चों को डर है। थोड़ी भी खराब चलन होगी तो नाम बदनाम हो जावेगा। यहाँ तो कोई बगुला है नहीं। यहाँ और वहाँ में बहुत फर्क है।

बाप के सम्मुख आने में बहुत फायदा होता है। बहुत हैं जिनको घमसान अच्छा नहीं लगता। संग तारे कुसंग बोरे। यहाँ तो कुसंग की बात ही नहीं। तुम हो मोती चुगने वाले। धारणा करने वाले। वह हैं किचड़–पट्टी वाले तो दिल हट जाती है। बहुत नुकसान कर देते हैं। यहाँ तो सभी हंस हैं। दूसरा कोई है नहीं। बाकी घर में तो सभी रहते हैं। एक हंस तो 10/12 बगुले होंगे। इसलिए मेहनत लगती है। बाप को याद करना है। जो विश्व की बादशाही देते हैं। उनको याद नहीं करेंगे। बाप तुमको बहुत साहुकार बनाते हैं। अपने लिए कुछ मेहनत करते हैं। अपनी कोई कामना नहीं है। इसलिए उनकी कशिश जास्ती होती है। फिर घर जाते हैं तो नशा गुम हो जाता है। जैसे कि भूल जाते हैं। यहाँ तो तुम हास्टल में बैठे हो। पढ़ते भी हो यहाँ। सभी कुछ यहाँ हैं। बाप गारन्टी भी देते हैं एक बाप को ही याद करना है तब पाप कटने हैं। इसलिए बाबा कहते हैं डायरी रखो। कोई को दुख तो नहीं दिया। अपनी जांच करनी है। सभी को सुख देना है। इसमें जितना फर्क पड़ता है उस अनुसार तुमको वरसा मिलता है। संगमयुग के बाद स्वर्ग होगा। ओम।